CAREER POINT
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH
Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252065

भारतीय सिनेमा के सामाजिक और नैतिक निहितार्थ

डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी

Asso. Prof. School of Education Career Point University Kota Raj.

*सिनेमा अपने जन्म के साथ ही भारत के विस्तृत द्वार में अपने अस्तित्व के पहचान की दस्तक देता है। भारत में इसके उत्थान में महान युग पुरुष दादा साहब फाल्के ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । भारत में अपने जन्म के साथ इसने अपने सामाजिक दायित्वों का पूरी निष्ठा के साथ निर्वहन किया है। स्वतंत्रता आंदोलन ,महाअकाल की विभीषिका, विभाजन की त्रासदी और नव स्वतंत्र भारत की आकांक्षाओं का श्रेष्ठतम अंकन इसमें प्राप्त होता है। परंतु उदारीकरण और विकासवाद की चकाचौंध व अपने राजनीतिक आदर्शों व सरोकरो से ज्यादा निष्ठा प्रदर्शन के कारण ,साथ ही अत्यधिक अर्थोन्मुख होकर इस अभिकरण ने सामाजिक सरोकारों को छोड़ना प्रारंभ कर दिया । जिससे नैतिक और सामाजिक मूल्यों की अवहेलना प्रारंभ हो गई ,और इस प्रकार भारतीय सिनेमा ने अपने आप को भारतीय सभ्यता के विरोधी के रूप में अपनी छवि को निर्मित करना प्रारंभ कर दिया है। **संजय लीला भंसाली** की **पद्मावत** ,**ओम रावत** की **आदिपुरुष** इसके प्रमाण जिनकी व्यापक आलोचना हुई है।परन्तु ,इस विधा में यदि संक्षिप्त संवैधानिक सुधार कर व्यवहारिक प्रावधान स्थापित कर दिए जाये ,साथ में सामाजिक जागरूकता यदि संभव हो सके ,तो यह अभिकरण महा परिवर्तन का ससक्त माध्यम बन जायेगा ,जो भारतीय समाज के दीर्घ जीवन हेतु महान सुधारो का कारक बनने में समर्थ है।*

सिनेमा अर्थात चलचित्र जिसमे चित्रों को गति द्वारा संयोजित कर जीवंत बनाया जाता है।जिसे १९ सदी के महान आविस्कारो में एक स्वीकार किया जाता है। जब एडिसन(१८७०) और ल्यूमर बंधुओं(१८९५) के प्रयासों से पहली बार मूक फिल्मों का निर्माण प्रारंभ हुआ । इन लोगों को स्वयं इस अनुसंधान के भविष्य के विषय में यह अनुमान नहीं रहा होगा कि आने वाले समय में यह विधा पूरी दुनिया की मानव जाति को प्रभावित करने वाली है। आगे के 3 दशकों में मूक फिल्मों का निर्माण हुआ जिनमें कुछ फिल्में चर्चित और लोकप्रिय हुई । अंततः 1928 **में लाइट्स ऑफ न्यूयॉर्क** पहली सवाक फिल्म बनी । सिनेमा अपने जन्म के साथ ही भारत आ गया था ,1898 में ल्यूमर ब्रदरस और राबर्ट पाल ने अपना छायांकन मुंबई में प्रदर्शित किया । यह भारत के भविष्य में विकसित होने वाले सिनेमा बाजार की संभावना की तलाश थी । क्योंकि भारत एक बड़ी आबादी वाला देश और नवीन अनुसंधानो और परिवर्तन को सहजता से स्वीकार करने वाला देश था । इसलिए भारत में सिनेमा अपने जन्म के साथ ही आ गया था । 1813 **में दादा साहब फाल्के** की **राजा हरिश्चंद्र** भारत में बनी पहली मूक फिल्म थी

Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252065

दादा साहब फाल्के ने अपना पूरा जीवन सिनेमा को दे दिया लगभग 13 फिल्में इन्होंने प्रस्तुत की इसीलिए आपको सिनेमा का भीष्म पितामह कहा जाता है। आगे चलकर आर्देशिर ईरानी द्वारा निर्मित **आलम आरा** भारत की प्रथम सवाक फिल्म मानी जाती है। **आलम आरा** से **मदर इंडिया**(१९४८) तक सिनेमा विकास की अवस्था में था ,जिसमें पटकथा अपने समस्त सामाजिक सरोकारों को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ती है।जिसका प्रभाव यह रहा कि जड़ी भूत भारतीय समाजक जीवन को एक नई ऊर्जा प्राप्त हुई । समाज में एक नवीन चेतना का जन्म हुआ । सतीप्रथा, बहुविवाह , छुआछुत,जातीयता,बंचित वर्ग का शोषण, राष्ट्रवाद , महामंदी, स्वतंत्रता आंदोलन ,भारत पाकिस्तान विभाजन और उपनिवेश की पीड़ा को उजागर करती इस कल खंड की सिनेमा का चलचित्र सामाजिक जनजीवन का प्रतिनिधित्व करता हैं।

इसीलिए 1940 से 1960 तक का कल खंड भारतीय सिनेमा के स्वर्णिम युग का प्रतिनिधित्व करता है। क्योंकि इस कालखंड में कई कालजयी चलचित्र अस्तित्व में आए । जिनका प्रभाव आज भी उतना सजीव दिखाई देता है।जितना उस कल में था, चाहे नायिका के सौंदर्य का छायांकन हो या संगीत की मधुरता ,भाषा की शालीनता हो अथवा पट कथा व सम्भाषाण, नायक नायिका प्रसंग हो , कही भी कभी येह पर सामाजिक नैतिक मूल्यों ,स्थापित परम्पराओं के बिखंडन का प्रयास नहीं किया गया । इसलिए इस कल खंड का सिनेमा सहित्या आज भी उतना ताजगी भरा और रोमांचक और उपयोगी तथा शिक्षाप्रद है। जितना अपने निर्माण के समय था । इस कालखंड की प्रतिनिधि सिनेमा में , **सत्यजीत राय** (पाथेर पाचाली, चारुलता, शतरंज के खिलाड़ी) ऋत्विक घटक (मेघा ढाके तारा), मृगाल सेन (ओकी उरी कथा), अडूर गोपाल कृष्णन (स्वयंवरम), **श्याम बेनेगल** (**अंकुर**, **निशांत**, **सूरज का सांतवा घोड़ा**), **बासु भट्टाचार्य** (**तीसरी कसम**), **गुरुदत्त** (**प्यासा**, **कागज के फूल**, **साहब**, **बीबी और गुलाम**), **विमल राय** (**दो बीघा जमीन**, **बन्दिनी**, **मधुमती**) इनका नाम सदैव स्वर्णिम अक्षरो से लिखा जायेगा ।

सत्यजीत राय ,गुरुदत्त ,पृथ्वीराज कपूर और अर्देशिर ईरानी,राजकपूर जैसे पटकथा लेखक निर्देशक व कलाकारों ने समाज के वास्तविक निहितार्थो और नैतिक मूल्यों से ऊर्जा प्राप्त की और समाज को युग अनुरूप परिवर्तन को दिशा देने के मिशन पर कार्य किया । जिससे भारतीय समाज में वैचारिक की चेतना का जन्म हुआ । नवीनसामाजिक अवधारणाओ तथा संरचनाओं का उदय और विकास हुआ । निश्चित रूप से समाज की जड़ता को तोड़ने में समाज को युग अनुरूप बनाने में इनका व्यापक योगदान अस्वीकृत नहीं किया जा सकता ।

Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252065

1980 **का दशक** भारत के सन्दर्भ में परिवर्तन करी थाए राजनीतिक विचारधारा समाज के केंद्र में आ चुकी थी ़ प्राचीनतम सामाजिक संरचना या तो परिवर्तित हो चुकी थी या ध्वस्त हो चुकी थी ़ ब हमारे गांव इतने सक्षम नहीं रहे थे पनी सभ्यता के आधारों को सुरक्षित बनाये रख सकते एक्योकि टंसमदजपदम बैपतवस;१८५२.१९२९द्ध का यह कथनए **स्पात की रल न भारत क गांवो की स्पाती आत्मनिर्भरता को चकनाचूर कर दिया** एसमग्रता से सत्य हो रहा था ़ राजनतिक महत्वाकांछाओ का चरम इमरजेंसी;१९७५ द्ध के रूप में सामने आया ़ पुनः कांगेस विरोधी सरकारों के पतन के साथ ए **साम्यवाद** का भारत में उदय जिसने भारतीय समाज को गड़े पिछड़े में ही नहीं बंटा बल्कि एजहा जहा से समाज को तोडा जा सकता था वहा से तोड़ने का प्रयास किया ़ इस बिखराव से उन्हें पने राजनातिक हित दिखाई दे रहे थे ़ इस कथित समाजवाद र्थात सेकुलरिज्म को राष्ट्रीय विचारधारा कि केंद्र में लाने का प्रयास किया गया ़ इसके लिए समाजवादियो ने इंदिरा सरकार को मजबूर करके एजनसंचार के समस्त साधनों को पने नियंत्रण में ले लिया ़ सिनेमा भी इससे छूता नहीं रहा ़ इसका प्रभाव सिनेमा जगत में यह पड़ा तथाकथित **सकुलारिसम और साम्यवाद** ने भारतीय परंपराओंए भारतीय मूल्य को उखाड़ फेंकने के प्रयत्न करने लगा ़ क्योकि साम्यवादियो ने पूरी दुनिया में जो किया वही भारत में करना चाह रहे थे ़ उनको सत्ता की चाभी सिनेमा सहित समस्त संचार के साधनों के नियंत्रण में दिखाई देती ह। आगे चलकर 1990 में कमर्शियल सिनेमा के जन्म के साथ सिनेमा पने मूल उद्देश्य से भ्रमित हो गया ़

आर्थिक उदारीकरण ;१९८५द्ध ने त्यधिक कॉमर्स रिलाइजेशन को बढ़ावा दिया इंटरनेट क्रांति ने सिनेमा को विस्तृत आकर तों दिया परन्तु उसकी आत्मा को छीन लिया ़ ब वह सिर्फ सस्ते फूहड़ सहित्य के रूप में पनी पहचान बनाने लगता हआप उदाहरन के रूप में **संजय लीला भंसाली** की **पद्मावत** जिसे पहले पद्मावती नाम दिया गया था ए***ओम रावत की आदिपुरुष*** जिसमे सिर्फ रास्ट्रीय महापुरुषो को पमानित और स्थापित मर्यदाओ को बिखेरने का कम किया गया ़ आज इसके सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य विलुप्त हो गए ह ़

एसा नहीं ह की च्छा सिनेमा बनना पूरी तरह बंद हो गया हजसे **विवक ग्निहोत्री** की **कश्मीर फाइल** ए **विपुल मृत लाल शाह** की **करला स्टोरी** यथार्थ वादी सिनेमा भी बनाए परन्तु धिकतम सृजन स्तरहीन और घटिया ह। जो समाज को कोई दिशा न देकर सिर्फ भोगपरक जीवन दर्शन और हिंसा का प्रचार मात्र हए ब मोबाइल क्रांति के कारण प्रत्येक घर के प्रत्येक व्यक्ति तक सिनेमा की पहुंच हो गई ह। च्छा सिनेमा या बुरा सिनेमा दोनों तक व्यक्ति की पहुंच बराबर ह ब उसके

Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252065

विवेक पर निर्भर करता हे कि उसे क्या देखना और क्या नहीं । इसका प्रभाव यह हुआ कि सिनेमा के समक्ष भारतीय सामाज के महानतम मूल्य व परंपराएं जिन्हें हजारों वर्षों से शिलाखंड के समान संरक्षित किया गया था एउसकी नीव डगमगाने लगी हे। समाज विज्ञानी भविष्य कथन करने को बाध्य हेएकि भविष्य का भारतीय समाज अपने मूल अस्तित्व को संरक्षित कर पाएगा या इस अंधी दौड़ में कहीं विलुप्त हो जाएगाए यह वर्तमान का मुख्य प्रश्न हेएएक विचारक के रूप में इस प्रकार के चिंतन की आवश्यकता पर सदन का ध्यान इसके कारणों और परिणामों के साथ.साथ समस्या के समाधान की ओर आकर्षित करना चाहूंगा ।

राष्ट्रपिता **महात्मा गांधी** ने अपनी जीवनी **सत्य के प्रयोग** में लिखा हेकि अपने बचपन में मैंने **सत्य हरिश्चंद्र** नाटक देखा था जिससे मुझे सत्य पर आश्रित आचारण करने लिए प्रेरणा मिली । सिनेमा नाट्यकला का ही विकसित प्रदर्शन हेएचित्रपट में जो फिल्माया जाता हेवह वास्तव में एक नाटक के रूप में ही प्रस्तुत किया जाता हेनाटक साहित्य का एक अंग हेसाहित्यए पाठक या दर्शक की मनो रचना को प्रभावित करता हेउसके चिंतन और मनन को अपने अनुरूप ढालता हे। क्योकि चित्त ही ब्यक्ति व्यवहार को परिचालित करता हे। चलचित्र भी अपने दर्शक के चित्त को प्रभावित करके उसके व्यवहार को नियंत्रित करता हे।

वर्तमान में सामाजिक जीवन की अनेकों विकृतियों के पीछे यदि चलचित्र व इससे जुड़े हुए कारकों को जिम्मेदार माना जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । भारतीय चित्रपटो से अपेक्षा यह की गई थीए कि भावी पीढ़ियों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने का वैधानिक दायित्व उठाएंगे । नवयुवाओ में सकारात्मक चेतना को संजीवनी के समान विकसित करेंगे एपरंतु ऐसा संभव नहीं हुआए बल्कि इसके विषय परक अनेकों विषैले फन आज संचार माध्यमों के अनेक साधनों को अपने आगोश में लिए हुए हे और अपना विषवमन नवयुवकों के मस्तिष्क में पूरी पराकाष्ठा के साथ कर रहे हैं। यदि समय रहते इसको सामाजिक और संवैधानिक उपबंधो के द्वाराए नियंत्रित नहीं किया गया तो भविष्य का भारतीय समाज कम से कमए त्यागए तपस्याए प्रेमए सत्य एअहिंसा के लिए नहीं जाना जाएगा। क्योंकि इसके अनेकों विषाक्त फन जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म एफेसबुकए इंस्टाग्राम एट्विटरए व्हाट्सएप आदि के रूपए आज समाज के समक्ष सिर्फ ब्यवसायिक प्रकृति द्वारा संचालित हेएउनका एकमात्र मकसद अपने बाजार को अपने अनुकूल बनाना हे और लाभ कमाना हे । चाहे नव युवा चेतना उनके इस विषय बोध से कुंठित होकर नष्ट ही क्यों न हो जाएए चाहे भारतीय परंपरा भारतीय मर्यादा या यूं कहें कि समस्त भारतीय पहचान नष्ट ही क्यों न हो जाए ए इससे इनको कोई लेना देना नहीं हे

CAREER POINT
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH
Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252065

परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय चरित्र आज विकृत हो रहा ह□क्षमाए दया एप्रेम आदि मूल्य मानव मन से धीरे. धीरे न्यून से न्यूतम होते जा रहे ह□ क्योंकि चेतन और □वचेतन मन में निरंतर स्वार्थ और भोग भरा जा रहा ह□ इसके समग्र कारणों पर □नुसंधान करते हुए इसके निदान के उपायों पर भी चर्चा की जानी चाहिए। सहज प्रश्न उठता ह□कि आखिर समाज के हित में जन्म लेने वाली यह संस्था सीनेमा किन कारणों से □पने उद्देश्य से भटक गई ह□ उन कारणों का □न्वेषण कर उनके निदान पर विचार किया जाना आवश्यक ह□

सिनेमा द्वारा सामाजिक सरोकारों की □स्वीकृति के कारणरू.....

१ण्सिनेमा उद्योग का □ति व्यवसायिक दृष्टिकोण ।

२ण् भारतीय समाज और भारतीय परंपराओं से स्वयम को पृथक □नुभव करना ।

३ण्सकारात्मक विषयों के बजाय नकारात्मक विषयों को □धिक महत्व देना क्योंकि नकारात्मकता प्रचार जल्दी देती ह□

४ण् भारत भूमि के महानायक को और आदर्श पुरुषों की □वहेलना करनाए परिणाम स्वरूप भारतीय नवयुवकों के समक्ष आदर्शों का संकट उत्पन्न हो गया ह□उन्हें स्पष्ट नहीं होता ह□कि उनका आदर्श कौन ह□और किस के □नुसार उन्हें जीवन जीना चाहिए ।

५ण् भारतीय परंपराओं को तिरस्कृत कर उनका मजाक बनाना उन्हें पिछड़ेपन की निशानी बना देना ।

६ण् भारतीय भाषा के प्रति नकारात्मकता का विकास और उसे पिछड़ा मानना और बताना ।

७ण्दुराचार और हिंसा का विकृत प्रदर्शन ।

८ण् खलनायको का महिमामंडन उसकी महिमा प्रदर्शन के समक्ष कई बार नायक का □स्तित्व बहुत हीन दिखाई देता ह□□तः खलनायक समाज के आदर्श बनने लगे ह□।

९ण् नग्नता को नारी स्वतंत्रता से जोड़कर नारी देह का बाजारीकरण करके पूरे समाज में विकृत मानसिकता का प्रचार करनाएउसे आधुनिकता का पर्याय मानना ।

Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252065

१०ण चलचित्र के निर्माण में वित्त पोषण का पारदर्शी न होना □वद्ध धनए विदेशी वित्तपोषणए □पराधियों व नशा तस्करों द्वारा वित्तपोषण किया जाना ध

११ण सक्षम कानूनों का □भाव सिनेमा सहित सारे रूपहले परदे को सामाजिक दायित्व और न□िक मूल्यों की □वहेलना करना सिखाता ह□

समाधान के उपाय रू

यदि उपरोक्त कारणों का गहन □न्वेषण किया जाये तो इनका निदान भी इन कारणों में ही छिपा हुआ ह□

१सिनेमा के प्रत्येक प्लेटफोर्म को सामाजिक और न□िक दयित्व सुनिश्चित किए जाएं ध

२ण कहानी के नकारात्मक विषयों को महत्व न दिया जाये ध

३ भारत के महान नायकों को सम्मान प्राप्त हो यदि उनके नकारात्मक छवि को प्रस्तुत किया जाए तो उसका विरोध किया जाना चाहिए ध

४ण भारतीय परंपराओं का तिरस्कार दंडनीय □पराध स्वीकार किया जाए ध

५ण नारी शक्ति भारतीय समाज में पूजित □वधारणा ह□उसे बराबर नहीं पुरुषों से श्रेष्ठ स्थान प्राप्त ह□ उसे □नावृत करना पूरी तरह से तिरस्कृत माना जाए ध

६ण दुराचार और हिंसा के प्रदर्शन के मानक निर्धारित किए जाये ए निश्चित मर्यादाओं के □ंदर ही कोई काथानक किन विषयों को प्रस्तुत कर सके यह स्पस्ट किया जाये ध

७ण सक्षम कानूनों का निर्माण करके इस उद्योग में □न□िक वित्तपोषण को रोका जाए ध विदेशी फंडिंग व हवाला पर तुरंत संव□ानिक प्रक्रिया के द्वारा रोक लगाई जानी चाहिए ध

८णसामाजिक जागरूकता सिनेमा को एक □च्छे उपकरण के रूप में स्थापित कर सकती ह□सामाजिक रुप से हीनए परंपरा विरोधी ए □न□िक □वधारणाओं व □न□िक चरित्र के प्रस्तुतीकरण पर समाज स्वयं रोक लगा सकता ह□ इसके लिए उसकमें जागरूकता की आवश्यकता ह□ जब तक सामाजिक

चेतना किसी विषय को केंद्र में नहीं लाती तब तक लोकतंत्र में संवद्यानिक संस्थाएं उसे स्वीकार नहीं करती सामाजिक जागरूकता संवद्यानिक संस्थाओं को भी सक्रिय कर सकती ह□

इस प्रकार यदि संक्षिप्त संवद्यानिक सुधार और भारतीय समाज में जागरूकता के माध्यम से चलचित्र को एक उपयोगी □भिकरण में परिवर्तित किया जा सकता ह□जो सामाजिक शिक्षा व सृजन के महत्वपूर्ण उपकरण में परिवर्तित हो सकता ह□और मानव समाज के दीर्घ गामी विकास को नवीन आयाम देने में सक्षम होगा ।